मुंबई पत्तन प्राधिकरण

अपना पोर्ट

(अक्तूबर2021- मार्च2022)

आज़ादी का अमृत महोत्सव

विशेषांक

(मुंबई पोर्ट के 150वें वर्षमें पदार्पण के शुभअवसर पर)

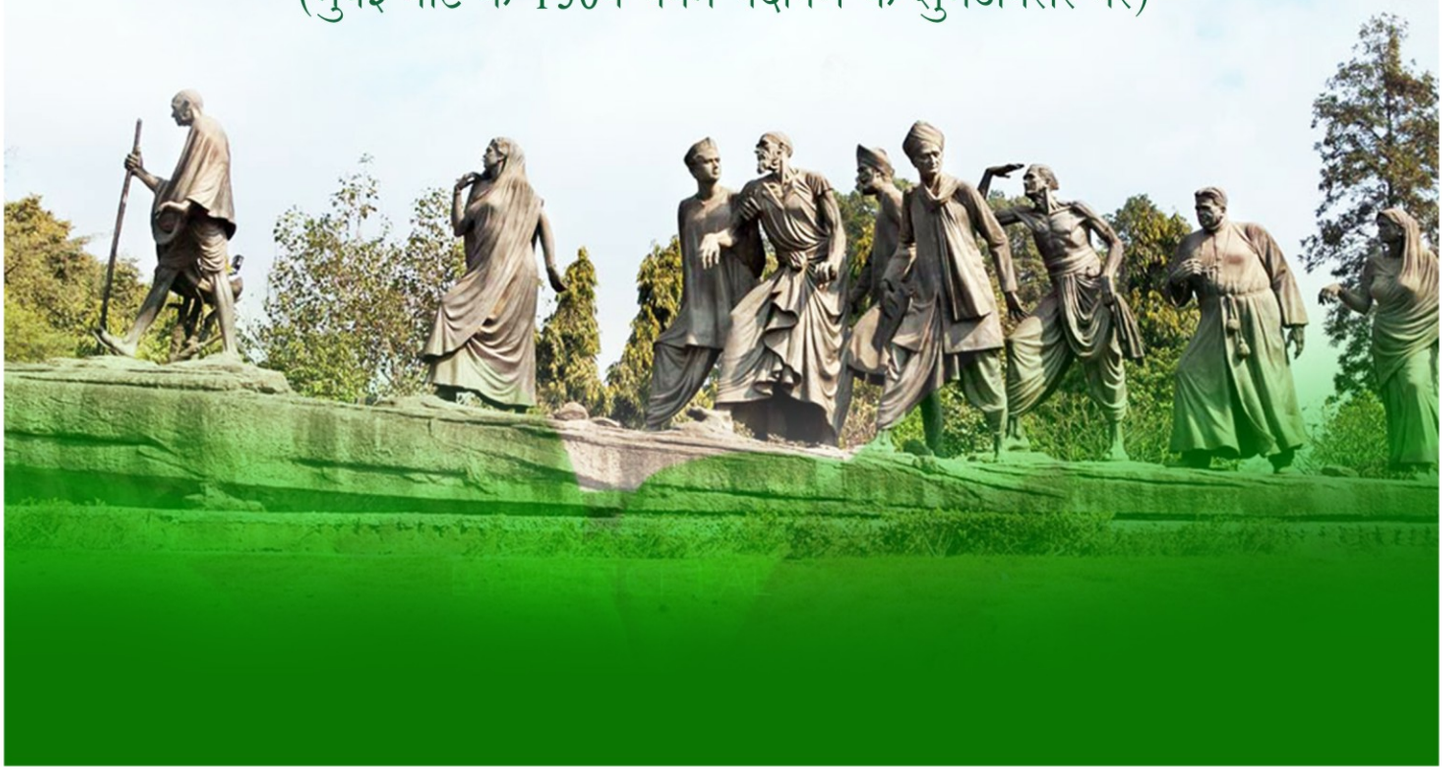

आज़ादी का अमृत महोत्सव

अध्यक्षजी की पटल से

श्री राजीव जलोटा, भा.प्र.से.
अध्यक्ष, मुंबई पत्तन प्राधिकरण

मुझे आजादी के अमृत महोत्सव के तथा मुंबई पत्तन के डेढसौंवे वर्ष में प्रविष्ट होने के अवसर पर मुंबई पत्तन प्राधिकरण (मुंपप्रा) के अध्यक्ष के नाते मेरे कुछ विचार आपके समक्ष रखने में अत्यधिक खुशी हो रही है तथा मैं पत्तन की गृहपत्रिका 'अपना पोर्ट' के द्वितीय अंक (संस्करण) को अवलोकन हेतु आपका स्वागत करता हूँ.

यह गृहपत्रिका पत्तन के सभी हितकारकों, पत्तन उपभोक्ताओं तथा अधिकारियों व स्टाफ को अपना मनोगत

व्यक्त करने का एक माध्यम है जिसमें पत्तन की गति और प्रगति को साझा किया गया है.

मैं आपके निरंतर सहभाग के लिए आपका आभारी हूँ तथा आशा करता हूँ कि हम आपके कारोबार के लक्ष्य की उन्नति के लिए एकीकृत भूमिका कैसे निभा सकते हैं इसका समाधान तलाशेंगे. मुंबई पत्तन में यहाँ हम ठोस परिणामों को प्रदान करते हुए पत्तन समुदाय की सेवा करने के लिए कटिबद्ध हैं.

मुझे विश्वास है कि यह गृह पत्रिका आपको पसंद आएगी.

उपाध्यक्षजी का संदेश

श्री आदेश तितरमारे, भा.प्र.से.
उपाध्यक्ष, मुंबई पत्तन प्राधिकारण

जिसके पीछे 149 वर्षों का देदीप्यमान इतिहास है ऐसे मुंबईपत्तन प्राधिकरण (मुं.प.प्रा) का उपाध्यक्ष होने का बडा सौभाग्य मुझे मिला है.

हमारे फलते-फूलते पत्तन सतत नई संरचना, नये व्यवसाय अवसरो के सृजन में लिप्त है जिसके चलते नये

नौभार को आकर्षित करके नई राहें खोल दी गई है. दुनिया के चलन के साथ अग्रसर होने हेतु पत्तन आकांक्षाओं की सीमाओं को लांघकर लगातार प्रगति कर रहा है.

हमारे पत्तन उपभोक्ताओं, प्रतिष्ठित हितकारकों को पत्तन से संबंधित गतिविधियों के साथ रुबरु होने के उद्देश्य से यह गृहपत्रिका एक अत्यंत सुविधाजनक तथा प्रभावी माध्यम है. मुझे आशा है कि यह गृहपत्रिका महत्वपूर्ण तथा रोचक जानकारी प्रदान करेगी.

सभी को भारत की स्वतंत्रता के अमृत महोत्सव तथा हमारे पत्तन की 150वीं वर्षगांठ की शुभकामनाएँ.

आज़ादी का अमृत महोत्सव

आजादी का अमृत महोत्सव

परिचय:

आजदी का अमृत महोत्सव 12 मार्च 2021 को प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा दांडी मार्च के 91 वर्ष पूरे होने पर शुरु किया गया था. यह महोत्सव 15 अगस्त 2023 तक चलेगा. आजादी का अमृत महोत्सव मानाने का उद्देश 2047 में भारत के लिए एक विजन तैयार करना है.

आजादी का अमृत महोत्सव पांच स्तंभों के आधार पर मनाया जा रहा है. आजादी के लिए संघर्ष 75 साल के विचार 75 साल की उपलब्धियां, 75 साल के संकल्प आजादी के अमृतमहोत्सव के आधार स्तम्भ है.

आजादी का अमृत महोत्सव के ये स्तंभ युवा पीढी को आजादी के इतिहास और संघर्ष से अवगत कराने के लिए है, ताकि यह उन्हें आगे बढने और स्वतंत्र भारत के सपनों को साकार करने के लिए प्रेतित करे. आजादी का अमृत महोत्सव हमारे स्वतंत्रता सेनानियों और स्वतंत्रता आंदोलन को श्रद्धांजलि है इस अवसर पर मातृभूमि की आजादी के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले देश के सभी वीर स्वतंत्रता सेनानियों और नेताओं को हम नमन करते है.

आजादी अमृत महात्सव का अर्थ है स्वतंत्रता की ऊर्जा का अमृत. इसका अर्थ है स्वतंत्रता संग्राम के योद्धाओं की प्रेरणा का अमृत; नए विचारों और प्रतिज्ञाओ का अमृत और आत्मनिरभारत का अमृत.

स्वतंत्रता के लिए संघर्ष:

15 अगस्त 1947 से पहले लगभग 200 वर्षो तक अंग्रेज सरकार हम पर शासन कर रही थी, इससे पूर्व 230 वर्षा तक मुघलों ने हम पर राज किया. लेकिन धीरे-धीरे भारत के लोगों में राजनीतिक चेतना उत्पन्न होने लगी और भारतवासी स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए संभर्ष करने लगे. भारत वासियों ने लंबे संघर्ष के पच्छात स्वतंत्रता प्राप्त की. सन 1857 को हमारा प्रथम स्वतंत्रता संग्राम हुआ. अंग्रजों ने इसे 'गदर' या 'विद्रोह' का नाम दिया तो भारतीयों ने इसे स्वतंत्रता संग्राम कहा. रानी लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे, नाना साहब, राव तुलाराम जैसे देशभक्तों ने अंग्रेजों को यहां से भगाने के लिए तलवार उठाई. इसमें देश के असंख्य वीरों ने खुलकर भाग लिया, परंतु देश में कुछ ऐसे गद्दार और अंग्रेजो के पिट्ठू राजा भी थे, जिन्होंने अपने व्यक्तिगत लाभ के लिए अंग्रजों का साथ दिया इसलिए स्वतंत्रता का यह प्रथम प्रयास सफल नहीं हुआ.

भारत की स्वतंत्रता की कहानी भी लगातार संघर्षो और बलिदानों की कहानी है. स्वतंत्रता की चिंगारी जो 1857 में सुलगी थी, उसे महात्मा गांधी, पंडित नेहरु, लोकमान्य तिलक, सरदार पटेल, नेताजी सुभाष संद्र बोस आदि ने इसे शोला बना दिया भगत सिंग, राजगुरु चंद्रशेखर ने इसे हवा दी. हम स्वतंत्रता पाने के लिए संघर्ष करते रहे. देश भक्तों ने जेल यात्राएं की गोलियां खाई, अनेक वीरों ने अपने प्राणों का बलिदान दिया. राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने भी स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए अनेक बार सत्याग्रह किया उन्होंने दांडी यात्रा करके नमक कानून को भी भंग किया. अंग्रेज सरकार ने स्वतंत्रता सेनानियो को जेलों में भर दिया और जनता पर अत्याचार किए जाने लगे. अंत में 1942 में गादी जी के नेतृत्व में अंग्रेजों भारत छोडो नारा लगाया. इस आंदोलन में बहुत से भारतीयों ने भाग लिया. परिणाम स्वरुप 15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ.

भारत की पराधीनता और उसका शोषण:

हमारे भारत को कभी सोने की चिडिया कहा जाता था हमार भारत कभी मानवता के सागर के लिए जाना जाता था. प्राचीन समय में हमारा देश सबसे उत्रत था. लेकिन कई सालों तक पराधीनता के होने की वजह से हमारे देश की स्थिति ही बदल गई है. भारत आज के समय में दुर्बल, निर्धन और सिकुडकर रह गया है. स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए कई महान लोगो ने अपने प्राणों को त्याग दिया था. लेकिन स्वाधीन होने के कई सालों बाद भी मानसिक रुप से हम अभी तक स्वाधीन नहीं हो पाए है. हमने विदेशी संस्कृति, विदेशी भाषा को अपनाकर अपनी मानसिक पराधीनता का परिचय दिया.

आत्मनिर्भर भारत

आत्मनिर्भर भारत के प्रधागमंत्री नरेन्द्र मोदी की भारत को एक आत्मनिर्भर राष्ट्र बनाने सम्बन्धी एक दृष्टि है. इसका पहली बार सार्वजनिक उल्लेख उन्होने 12 मई 2020 को किया था जब वे कोरोना-वाइरस विस्वमारी सम्बन्धी एक आर्थिक पैकेज की घोषणा कर रहे थे.

यह अभियान कोविड-19 महामारी संकट से लड़ने में निच्छित रुप से एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएरगा और एक आधुनिक भारत की पहचान बनेगा. इसके तहत प्रधानमंत्री नरेद्र मोदी ने 20 लाख करोड़ रुपए के राहत पैकेज की घोषणा की है जी देश की सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 10 प्रतिशत है. इसकी खास बात यह है कि उन्होंने किसी को भी नगद बहुत कम दिया, लेकिन अर्थव्यवस्था के सम्यक संचालन का जो अभूतपूर्व दृष्टिकोण दिया, उससे न तो देश घाटे में रहेगा, न ही किसी को आगे वित्तीय मनमानी करने की छूट मिलेगी, जैसा कि अब तक बताया जाता रहा है.

भारत ने अब रक्षा, दूरसंचार, कोविड-19 व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण, उर्वरक, लोहा और इस्पात में आत्मनिर्भरता के मामले में विश्वव्यापी पहचान हासिल कू है. भारत ने 'वोकल फॉर लोकल' और 'मेक फॉर वर्ल्ड' हासिल किया है, जिसके आयात में कमी और निर्यात में वृद्धि हुई है, जो आत्मनिर्भरता का संकेत है.

राष्ट्रोत्रति में स्वाधीनता का महत्व:

हमारा यह कर्तव्य होता है कि हमें किसी भी राजनैतिक, सांस्कृतिक और किसी भी अन्य प्रकार की पराधीनता को अपनाना नहीं चाहिए. हर राष्ट्र के लिए स्वाधीनता का बहुत महत्व होता है. कोई भी स्वतंत्र राष्ट्र तभी उत्रति कर सकता है जब वह पूरी तरह से आत्मनिर्भर हो. जो देश या जाति स्वाधीनता का मूल्य नहीं समझते है और स्वाधीनता को हटाने के लिए प्रयत्न नहीं करते वे किसी-न-किसी दिन पराधीन जरुर हो जाते है और उनका अस्तित्व समाप्त हो जाता है. स्वाधीनता को पाने के लिए कुरबानी देनी पडती है. जो आत्मनिर्भरता का संकेत है.

आजादी का अमृत महोत्सव

आज जब हम आजादी की 75 वी वर्षगांठ बनाने के लिए आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं तो इस समय हम उन देश प्रेमियों को याद करते है. जिन्होंने अपने सारे सुखों को ठोकर मार कर अंग्रेजों से केवल इसलिए लोहा लिया था ताकि दूसरे देशवासी एवं भावी भारतीय सुबचैन और सम्मान के साथ जी सके. निच्छित रुप से उनके बलिदान रंग लाए. परंतु अब हमारा यह कर्तव्य बनता है कि हम देश को इतना सुरक्षित और मजबूत बनाएं कि कभी कोई विदेशी इसकी और आंख उठाकर भी ना देख सके. केवल स्वतंत्रता दिवस में ही हमारा कर्तव्य पूरा नहीं हो जाता. हम सबको आपने अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिए और देश के हित में विभिन्न समस्याओं का सामना करना चाहिए.

उपसंहार:

हमें आत्मनिर्भर भारत-शक्तिशाली भारत-स्वावलंबी भारत के सपने को सच करते हुए अपनी कर्तव्य-परायण भावना का परिचय राष्ट्र के प्रति समर्पित होकर करना चाहिए, ताकि हम इतने शक्तिशाली राष्ट्र के रुप में उभर सके. ताकि भविष्य में कोई भी आसुरी शक्ति की ओर आँख उठाकर भी न देख सकें. हमारे पूवजों ने हमें जो आजादी की है, उसे हमें सुरक्षित रखना है तथा उन्नती के मार्ग पर अग्रसर रखना है.

श्रीमती दिशा तेलंग
विभाग: यातायात विभाग

प्रणम मातृभूमि

विजय विश्व तिरंगा प्यारा
मेरा भारत देश है सब से न्यारा
जाह पनकती सदाचार अवं भाईचर;
वीर शिवाजी, भगत सिंह, रामांजुना, अमिताभ
सचिन, नीरज और कल्पना चावला
है भारत के अनमोल रतन
ऐसा विशाल है मैरा वतन
सदा करो इसकी जतन
वीर सैनिको ने की थाट की रक्षा
भारत मां की गोदी में है हम सब को सुरक्षा
सच्चा नागरिक बने भारत का हर कोई बच्चा
मातृभूमि के प्रति हो सर गर्व से ऊंचा
ऐसे अनमोल मठी को मेरा प्रमाण
कबि न लगने देना देश की प्रगति को पूर्णविराम
सब करो देश के प्रत श्रमदान
ना हे व्यार्थ वीर जवानों की बलिदान
तो बोलो मेरा संघ जय हिंद जय हिंद

श्रीमती विद्या गनपती हेगडे,
अवर सहायक, इंदीरा कार्यालय,
गोदी विभाग.

आत्मनिर्भर भारत

भारत दुनिया के प्राचीन देशों में अपना एक विशेष स्थान रखता है. यहाँ की संसकृति, रंग-ढंग और कला को देखकर हम यह साबित करते है कि भारत पहले से आत्मनिर्भर रहा है. आत्मनिर्भर का सही अर्थ हम जाने तो इसका यही मतलब होता है कि स्वंय के हुनर पर ही खुद का विकास और सुद्रढ होना, चाहे वह विकास छोटे स्तर से हो या फिर बडे स्तर पर हम अपने छोटे स्तर से खुद के हुनर पर अपना विकास करेंगे तो इसके साथ ही हमारे देश का भी आर्थिक तरीके के साथ और भी कई तरह से विकास में हमारी भूमिका बनेगी.

आसान से शब्दो में कहे तो लोकल सामग्री का उपयोग करना ही आत्मनिर्भर का एक रुप है. आत्मनिर्भर भारत के उदाहरणों में मत्सय पालन, पशुपालन, मधमक्खी पालन, खेती कुटीर उद्योग द्वारा प्राप्त सामग्री आदि शामिल है. इन सभी के सहयोग से हम अपने शहर से छोटे शहरों और गाँवो में इसको पहुँचाकर राष्ट्र के विकास में अपना अहम योगदान दे सकते है.

आत्मनिर्भर का मतलब यही होता है कि हम अपने घरों में अपने द्वारा किसी सामग्री को तैयार करके उस सामग्री से उचित मूल्य प्राप्त कर और उससे अपनी आमदनी का भरण पोषण कर सके कच्चे सामान से सामग्री का निर्माण करके उसकी वहाँ पर पूर्ति करना जहाँ पर इसकी अधिक जरुरत हो. जैसे आस-पास के बाजार या फिर आसपास किसी छोटे गाँव, शहर में.

आत्मनिर्भर भारत योजना में भारत को हर उस क्षेत्र में सक्षम होना है, जिसमें वह दूसरे देशों की मदत लेता है. आत्मनिर्भर भारत अभियान का उद्देश्य भारत के संसाधन को भारत में ही अधिक उपयोग में लाना है. भारत में अधिक उद्योगों को सुचारु करना और यहाँ के हर युवा को रोजगार के लिए आग्रेसित करना और आत्मनिर्भर बनाना है. इससे देश के विकास में बहुत लाभ मिलेगा और भारत एक आत्मनिर्भर राष्ट्र बनेगा.

यदि देश आत्मनिर्भर होगा तो इसके कई सारे फायदे होगे जैसे (1) देश में उद्योगो में बढोतरी होगी. (2) देश बेरोजगारी के साथ-साथ गरीबी से भी मुक्त होगा. (3) आयात की जगह पर निर्यात बढेगा, जिससे विदेशी मुद्रा का प्राप्त भंडार होगा. (4) किसी भी प्राकृतिक आपदा के समय देश में खाद्यान की माँग बढ जाती है,

यदि देश आत्मनिर्भर होगा तो उसको किसी दूसरे देश पर निर्भर रहने की जरुरत नहीं होगी. (5) देश का हर युवा सफल, सक्षम होगा और साथ ही उसके पास रोजगार होगा.

यदि हमारा देश किसी दुसरे देश पर किसी संसाधन को लेकर निर्भर है तो हमें भी उस देश के अनुरुप ही काम करना पडेगा और उस देश की हर वो शर्त को मानना पडेगा जो हमें चाहे नामंजूर ही क्यों ना हो. इससे दुसरे देशों की आर्थिक स्थिती मजबुत होती है. हमारे देश का पैसा दुसरे देशों के विकास में लगता है और हमारा देश कई गुना पीछे रह जाता है. हमारे देश में गरीबी, बेरोजगारी जैसी भयानक समस्या आ जाएगी. यदि हम यह निश्चय कर लें कि हमें और हमारे देश को हर क्षेत्र में आत्मनिर्भर होना है तो हमारे देश को एक विकसित देश बनने से कोइ रोक नहीं सकता है. जब हमारा देश पूरी तरह से आत्मनिर्भर हो जायेगा तो एम सही तरीके से स्वतंत्र होंगे.

आत्मनिर्भर भारत को लेकर अब सरकार भी बहुत अच्छे अच्छे कदम उठा रही हे तो हमें भी सरकार का सहयोग करना चाहिए और देश को आत्मनिर्भर बनाने में सरकार की मदद करनी चाहिए.

हमारे देश में एर संसाधन प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है. लेकिन हम कई सार ऐसी चीजे उपयोग में लेते है. जो किसी दुसरे देशों में बनी होती है. इससे हमें तो नुकसान होता ही है. साथ में देश को भी इसका बहुत बडा नुकसान भुगतना पडता है. हमारे देश में हर संसाधन उपलब्ध है. यदि उस संसादन का सही उपयोग करके देश में ही वस्तुएँ बननी शुरु हुई तो इससे देश को काफी फायदा होगा. इससे देश में उद्योगों की बढ़ोतरी होगी और देश के हर युवा को रोजगार मिलेगा और देश के नागरिको को पर्याप्त मात्रा में आवश्यक सामान.

देश में अधिक उद्योग लेगेंगे तो बेरोजगारी देश में कम होती और साथ ही देश में फैली गरीबी भी समाप्त होने के साथ-साथ देश की आर्थिक स्थिति में काफी सुधार होगा और अर्थव्यवस्था बहुत मजबूत होगी. फिर हमारे देश को किसी दूसरे देश पर निर्भर नहीं होना पडेगा. अधिक सामग्री बनने से हम अपने देश की सामग्री को और भी देशों को निर्यात कर सकते है. इससे हमारे देश में आयात में कमी होगी और साथ में निर्यात में बहुत अधिक बढोतरी होगी.

आत्मनिर्भरता से यह तात्पर्य हैं कि हमारा देश हर क्षेत्र में खुद पर निर्भर हो, उसको किसी भी दूसरे की मदद नहीं लेनी पडे. वह वस्तु का निर्माण करें जिसका उपयोग हम करते है. चाहे वो छोटी से छोटी सुई हो या बड़ी से बड़ी कोई वस्तु ही क्यों न हो. ऐसी किसी भी वस्तुओं के लिए किसी दुसरे देश के सामने हाथ नहीं फैलाना पड़े. हर व्यक्ति के लिए आत्मनिर्भर ही सबसे बड़ा और अच्छा गुण होता है. यदि व्यक्ति आत्मनिर्भर रहेगा तो उसको किसी दुसरे की बहुत ही कम जरुरत पड़ेगी और वह खुद बड़ी से बड़ी मुश्किल का आसानी से मुकाबला कर सकता है. आत्मनिर्भर होना जितना जरुरी व्यक्ति के लिए है उतन ही जरुरी एक देश के विकास के लिए भी है.

शनी लालजी प्रसाद
टंकक एवं संगणक लिपीक,
यातायात विभाग, हँमालेज
मोबाईल क्रमांक - 8080404698

परिचय:

भारत की आजादी की 75वी वर्षगांठ पर 75 सप्ताह पूर्व आजादी का अमृत महोत्सव देश में बड़े उल्लास के साथ प्रारंभ हो गया है. 12 मार्च 1930 को राष्ट्रपिता महात्मा गांधीजी ने नमक सत्याग्रह की शुरुवात की थी. यह एक ऐतिहासिक घटना थी. 2021 में इस सत्याग्रह को 91 वर्ष पुरे होने पर हमारे मा. प्रधानमंत्रीजी ने साबरमती आश्रम से अमृत महोत्सव की शुरवात पदयात्रा को हरी झंडी दिखाकर की. यह महोत्सव पुरे देश में 15 अगस्त 2023 तक चलेगा. देश की सांस्कृतिक सभ्यता को प्रदर्शित करने वाले सांस्कृति कार्यक्रम भी आयोजित किये जायेंगे.

उद्देश:

राष्ट्र का गौरव तभी जागृत रहता है, जब वो अपने स्वाभिमान और बलिदान की परम्पराओं को अगली पीढी को भी सिखता है. उन्हें संस्कारित करता है, उन्हें इसके लिए निरंतर प्रेरित करता है. यह अमृत महोत्सव हमे अवसर देता है कि हम भविष्य पर निगाह रखते हुए देश की आजादी के संघर्ष के गौरवशाली इतिहास को भी याद रखें. यह उत्सव है हमारे इतिहास का, नये संकल्पो के साथ का आत्मनिर्भरता के आगाज का, भारत के बलशाली बनने के अहसास का.

भारत की आजादी की कहानी लगातार संघर्षो और बलिदानों की कहानी है. इस सुनहरी आजादी को प्राप्त करने के लिए कई वीर हसते हसते कुर्बान हो गये थे. शहीदों ने सारे सुखों को ठोकर मारकर अंग्रेजो से इसलिए लोहा किया था ताकि दूसरे देशवासी एवं भावी भारतीय सुखचैन और सम्मान के साथ जी सके.

आज हमारा यह कर्तव्य बनता है कि एम देश को इतना सुरक्षित और मजबूत बनाएँ कि कभी कोई विदेशी इसकी और आँख उठाकर भी ना देख सके. अपने कर्तव्य परायण भावना का परिचय राष्ट्र के प्रति समर्पित होकर करना चाहिए, ताकि हम शक्तिशाली राष्ट्र के रुप में उभर सके. हमें अपने ओर अपनों के संकुचित दायरे से बाहर निकल, सामाजिक दायित्व निभाना होगा.

आजादी के बाद की आज की तीसरी पीढ़ी देश को एक युवा राष्ट्र बनाती है. हमारी 65% आबादी 35 साल से कम उम्र की है, जो अकल्पनीय बदलाव लाने की क्षमता रखती है. हमें अपनी कमजोरियों को जानना होगा, उनका आकलन करना होगा, ना डरें, आत्मसम्मान के साथ आगे बढना होगा. तभी हम तेजी से हो रहे जबरदस्त बदलाव के दौर में अपने पाँव मजबूती से जमाए रख सकेंगें.

यह भी एक कटू सत्य है की आजादी के कई सालों बाद भी मानसिक रुप से हम अभी तक आजाद नहीं हो पार है. डॉ. तोमर कहते है की दासता से मुक्ति के सात दशक बीतने पर भी जिस खुशी और मुक्ति, उल्लास को लोक में दिखना चाहिए था, वो अभी तक नहीं आयी है. यह सोचना या मानना तो बिल्कुल ही गलत है कि देश केवल राजनेताओं और अभिनेताओं से बनाता है. देश बनता है वहाँ रहने वाले लोंगों से, चाहे वो किसी भी धर्म या समुदाय के क्यों न हों, आप से, चाहे वो किसी भी धर्म या समुदाय के क्यों न हों, शाप से, एम-तुम से और उन सभी से, जो अपनी बुध्दिमत्ता, कर्मढता, योग्यता और शक्तियों से देश का गौरव बढ़ाते हुए बहुजन हित के लिए सोचते है. भारत के पास गर्व करने के लिए समृद्ध ऐतिहासिक चेतना और सांस्कृतिक विरासत का अथाह भंडार है. इससे प्रेरीत हो हमें आर्थिक-सामाजिक गैर-बराबरी की धूल को पोंछ, खुशहाल भारत के निर्माण का यज्ञ पूरा करने के लिए और तेजी से जुट जाने के लिए आगे आना होगा. गरिबों, किसानों, नारी एवं दलितों पर हो रहे अन्याय को दूर करना होगा.

कोरोना काल में मानवता को महामारी के संकट से बाहर निकालने के लिए, वैक्सीन निर्माण कर हमने आत्मनिर्भर भारत का परिचय दूनिया को दिया है. भारत की आत्मनिर्भरता से ओतप्रोत हमारी विकास यात्रा पूरी दुनिया की विकास यात्रा को गति देने वाली है. आजादी का अमृत महोत्सव आजादी की लडाई के साथ-साथ आजाद भारत के सपनों और कर्तव्यों को देश के सामने रखकर आगे बढने की प्रेरना देगा.

हमारा यह सौभाग्य है कि हम आजाद भारत के इस ऐतिहासिक कालखंड के साक्षी बन रहे हैं, जिसमें भारत उन्नति की नई उंचाइयों को छू रहा है. हम सभी भारतवासी हमें आजादी का यह दिन दिखाने के लिए स्वाधीनता संग्राम में अपने आपको आहूत करनेवाले, देश को नेतृत्व देने वाली सभी महान विभूतियों के चरणों में नमन और उनका कोटि वंदन करते है.

''चलो आज फिर एकता दिखाते है
स्वच्छता की कसम खाते है
शहोदों को सम्मान दिलाते है
मिलकर आजादी का अमृत महोत्सव मनाते है.''

जयहिंद...

श्री मंगेश ज. गवारे
प्रवर सहायक
सामान्य प्रशासन
भ्रमणध्वनी: 9869444009

आज़ादी का अमृत महोत्सव

आत्मनिर्भर भारत

आत्मनिर्भर की व्याख्या करने गये तो उसका मतलब वही शब्द में छुपा है, आत्म यानी खुद और निर्भर यानी विश्वास इसका मतलब खुद पर पुरा विश्वास रखना यही होता है. महात्मा गांधी ने कहा था **''सत्य जो बिना जन समर्थक के भी खडा रहता है''** उसे भी आत्मनिर्भर कहते है. भारत इस विश्व मे एक प्राचीन देशों मे अपना एक विशेष स्थान रखता है. इस देश की भारत पहले से आत्मनिर्भर रहा है. भारत स्वंय के हुनर पर अपना विकास करेंगे तो इसके साथ ही हमारे देश का भी आर्थिक और सामजिक का भी विकास होगा और इसी तरह देश के विकास में हम सब की भूमिका होगी.

अगर कोई व्यक्ती हो या देश किसी दुसरे पर निर्भर रहेगा अपनी आवश्यकता के लिए और हर बार दुसरे की मदद से ही गुजारा कर रहा है तो उसमे सब बडी कमी है. वह कभी भी मुश्किल मे आ सकता है. इसलिए अगर खुद पर निर्भर रहे तो कोई भी मुसीबत आये तो वह खुद ही खुद से सुलझा सके और दुसरे की मदद की जरुरत नही पडेगी.

अभी जीता जागता उदाहरण है. अफगणिस्तान देश का जो परिणाम है. यह देश अमेरिका पर निर्भर था जो कि उनके देश में अमेरिका देश का सैन्य तैनात था. जैसे ही कुछ राजनीतीक अस्वस्थता के कारण अमेरीका ने अपना तैनात सैन्य अफगाणिस्तान से हटाया तालिबान ने अफगणिस्तान पर कब्जा किया. इसलिये आज की जगत में खुद पर निर्भर होना खुब जरुरी है.

हमारे देश में हर संसाधन भरपूर मात्रा में उपलब्ध है. लेकिन हम कई चीजे उपयोग में लेते है जो किसी विदेशों मे बनी होती है. इससे हमारे हमें तो नुकसान होता है. साथ में देश को भी बहुत बडा नुकसान भुगतना पडता है.

हमारे देश में बहुत सारे संसाधने उपलब्ध है. उसका सही इस्तेमाल किया जाये तो सभी वस्तू एवं चीजे भारत में ही बनने से लोगों को भी रोजगार मिलेगा और देश का विकास होगा. जिससे अर्थव्यवस्था भी सही से चलेगी और औद्योगिक क्षेत्रों को भी फायदा होगा.

चीन से शुरुआत हुए **''कोरोना''** विषाणु के वजह से विश्व में महामारी प्रकोप हुआ उसके चलते हुए भारत में सभी को उसका झटका बैठा. सभी देंशो की अर्थव्यवस्था रुक गयी. विषाणु के डर से, घर के बाहर निकलने से घबरा गए थे. इससे सभी औद्योगिक क्षेत्रों को भारी नुकसान पहुचा. इससे चलते कही लोगो को अपन रोजगार खोना पडा इसे लोगो का भी भारी नुकसान पहुचा.

कोरोना महामारी के दौरान देश में लागु लॉगडाऊन के कारण अर्थव्यवस्था पर नकारात्मक प्रभाव पडा है. जिससे बेरोजगारी और भूखमरी के समस्या लोगों पर पडी. इसलिए लोगों ने महामारी के डरसे शहर से गांव जाने लगे जैसे की रिर्वस माइग्रेशन की समस्या हुयी. इस महामारी के कारण भारी नुकसान पहुँचा और अर्थव्यवस्था पुरी तरह गिर पडी. अर्थव्यवस्था को गती देने के लिए सरकार ने मुद्रा की पुन: स्फीती (Reflation) का मार्ग इस्तेमाल करके भारत सरकार ने ''आत्मनिर्भर भारत'' के तहत 20 लाख करोड का राहत पेकेज जनता के लिए जाहीर किया. जिससे लोगों को रोजगार एवं सुविधाएं मिल जाये. भारत की अर्थ व्यवस्था में सबसे ज्यादा छोटे उद्योग को भारी नुकसान पहुँचा इसलिये सरकार ने एम एस एम ई सेक्टर के लिये 3 लाख करोड रुपये का कोलॅटरल फी लोन का ऐलान किया. जिससे भारत की अर्थव्यवस्था इस महामारी में भी आत्मनिर्भर बने.

भारत सरकार इस महामारी से बचने के लिए आत्मनिर्भर भारत अभियान शुरु किया. इस योजना उद्देश 130 करोड भारतवासियों को आत्मनिर्भर बनना है. ताकि देश का हर नागरिक संकट की इस घडी में कदम से कदम मिलाकार चल सके और इस अर्थव्यवस्था के गती में अपना योगदान दे सके. आत्मनिर्भर भारत की ये भव्य इमारत पांच स्तंभ पर खडी होगी.

1.अर्थव्यवस्था (Economy): एक ऐसी अर्थव्यवस्था जो भारत का इंकीमेंटल चेंज नही बल्कि क्वांटम जंप लाए और अर्थव्यवस्था का चक्र घुमता रहे.

2. आधारभूत संरचना (Infrastructure): भारत में सभी क्षेत्रो में आधारभूत संरचना के विकास पर भर दिया जाये ताकि भारत विश्व में अपनी पहचान बना सके.

3. प्रणाली (System): एक ऐसी प्रणाली कां विकसित किया जाये जो बीती शताब्दी की री ती नीती नहीं, बल्कि 21 वी सदी के सपनो को साकार करने वाली प्रोद्योगिकी संचालित व्यवस्थाओ पर आधारित हो. ज्यादा से ज्यादा प्रोद्योगिकी का इस्तेमाल करके लोंगो तक पहुँचा जाए ताकि हर सुविधा गांव के लोगों तक जल्द ही पहुँचे. कुत्रिम बुध्दिमता का इस्तेमाल करके प्रणाली को बेहतर करे.

4. जनसांख्यिकी (Demography): भारत विश्व में लोकसंख्या के बारे में दुसरे स्थान पर है. भारत की औसत उम्र 29 साल है मतलब की युवा लोग सबसे ज्यादा है उनके कौशल्य का इस्तेमाल किए जाने की जरुरत है. जिससे ज्यादा से ज्यादा रोजगार उपलब्ध हो जायेगा.

5. मांग (Demand): हमारी अर्थव्यवस्था में मांग और सप्लाई का जो चक्र है जो ताकत है उसका पुरी क्षमता से इस्तेमाल किए जाने की जरूरत है. जिससे ज्यादा से ज्यादा रोजगार उपलब्ध हो जायेगा.

इस संकट ने हमारे देश को आत्मनिर्भर बनने का अवसर दे दिया है. इस भयानक महामारी में हमने सिध्द कर दिया है कि चाहे हमारे देश में कैसी भी विपरित परिस्थितीयों में हम देश के साथ है. और देश को किसी दुसरे पर निर्भर नही है.

हमने अभी तक कोरोना जैसी महामारी से लडने के लिए देश में सरकार के साहायता से देश में पीपीई किट, वेंटिलेटर और सैनिटाइजर दवाईया भी उत्पादन कर चुके है. जबकी पहले ये विदेश से मांग करते थे. भारत ने कोव्हिशिल्ड और कोवॅक्सिन जैसे दो टिकाओ का भी उत्पादन किया है और अभी तक 58 देशों को भी निर्यात किया है. इनका स्वंय उत्पादन करना आत्मनिर्भर भारत की और एक अहंम और पहला कदम है और यह सफल भी हुआ है. इससे हमारा देशों की नजरो में और भी उंचा हो गया है.

कोरोना के चलते लॉकडाऊन के कारण हो रहे अकादामिक नुकसान को देखते हुए केंद्र सरकार द्वारा **''पीएम ई विद्या''** योजना की घोषणा की जाएगी. इस योजना के तहत छोत्रों को विभिन्न माध्यमो के जरिए शैक्षणिक सामग्री उपलब्ध कराई जायेगी. साथ ही कक्षा 1 से 12 के लिए अलग अलग टीवी चैनलो की शुरुआत भी किये गयी है.

कोरोना के चलते ये ध्यान में आया की भारत आरोग्य क्षेत्र में आपूर्ति पुरी तरह से नही है. आरोग्य सुविधा को सुधार करने के लिए भारत को बाहर देश से निर्यात करने वाली दवाईया भारत में ही बनाने की आवश्यकता है. जिससे भारत में कोई आरोग्य सुविधा से वंचित ना रहे किसी भी विपरित परिस्थितियों में भारत ने आरोग्य आधारित संरचना पर काम करना चाहिए आत्मनिर्भर बनना चाहिऐ.

अर्थव्यवस्था को गति देने के लिए आवश्यक है की घरेलू उत्पादो पर अपनी निर्भरता को बढाना पडेगा ताकि निर्यात में कमी जा सके और आयात ने बढोतरी हो सके और भारत आत्मनिर्भर बनकर एक महासत्ता देश बन सके विश्व में.

जिगर भिमराव चौधरी
टंकक एवं संगणक लिपिक
एम ई ई डी, निर्माण भवन

अपना पोर्ट

आज़ादी का अमृत महोत्सव

"मैं भारतीय"

कुछ साल पहले
एक ख्वाब देखा था
साथ लेकर तिरंगा
मैं भी निकल पडा था

बस इतना ही कहूंगा
माहौल आदी का
कैसा हो ये ना सोचा था
साथ लेकर तिरंगा
मैं तो निकल पडा था

चारों दिशाएं मना रहे
जश्न आजादी का ऐसा
लहलुहान जमीन ने
हरा सपना लिखा था
साथ लेकर तिरंगा
मैं जब निकल पडा था

पहेचान मेरी हिंदुस्तान
सारे जहाँ ने माना है
आत्मनिर्भर, आत्मसन्मान
यह ना कोई नारा था
साथ लेकर तिरंगा
मैं अब भी निकल पडा हूँ..

प्रविण नाथा पावडे
वरीष्ठ सहाय्यक, अर्थ विभाग

हिंदी राष्ट्रभाषा

हिंदी राष्ट्रभाषा है प्यारी
प्रांत प्रांत को जोडे न्यारी

करोडो लोग बोले हिंदी
भारत माँ की जैसे बिंदी

हिंदी भारत का बहुमान
राष्ट्रभाषा हमारा अभिमान

हिंदी हमारी ज्ञान गंगा
कोई ना ले हिंदी से पंगा

हिंदी हमारी माँ समान
हर वक्त करेंगे सन्मान

सर्वश्रेष्ठ है हिंदी भाषा
जगभरकी वो अभिलाषा

अंग्रेजी है कार्यालीन भाषा अब
हिंदी लीख बोल चले अब सब

जय हिंद !

कल्पना किशोर देसाई
अर्थ विभाग-परिचालन सेवा केंद्र
मुंबई पोर्ट ट्रस्ट

आजादी का पडघम
जब गुंजा चारों ओर
खीली खीली चहूं दिशायें
दिलमे देशभक्तीका शोर

बरसो बीत गये
फिर भी नयीसी ये बेला
आज अमृत पर्वका
लगा जनमनमें मेला

शहीदों ने जगायी थी
मर मिटनेकी ये आस
महामारी से लढने का
उभरा अटूट विश्वास

चलों करें अभिवादन
सभी क्षेत्र के योद्धाओ को
अमृत पर्व पर याद करें
खून बहानेवाले विरोंको

विज्ञान तंत्रज्ञान से
लगातार बढे कदम
मेरा भारत महान
चमके विश्व मे हरदम

एकता अहिंसा के फूल
मेरी मातृभूमी मे बहराये
आजादी की खुशबू लेते
हर दिल मे तिरंगा लहराये

सुगंधा पाटील
अवर सहायक, चिकित्सा विभाग

आजादी का अमृत महोत्सव,
मनाये धूमधाम से,
उन शहीदों को नमन है,
जो मित गये आजदी के नाम पर,
देश उन्हें नहीं भूला पाएगा,
जो शहीद हुए गुमनामी में,
देश उनका भी ऋणी है,
जिनका नाम नहीं इतिहास में.
आजादी का अमृत महोत्सवी वर्ष है,
इस खुशी का अमृत पान करें,
स्वतंत्रता सेनानियों को याद करें,
उनका दिल से सम्मान करें
उनकी जीवनी से प्रेरित होकर,
देशवाशी हो गये धन्य,
उन वीर सपूतों को मेरा,
कोटी कोटी नमन.
आजदी के अमृत महोत्सव में,
छाई देश प्रेम की बयार है.
हर दिल में उमंग है,
मनो हर दिन एक त्योहार है.
इस अमृत महोत्सवी वर्ष में,
देश प्रेम की अलख जगानी है,
शहिदों की कुर्बानी की,
सबको याद दिलानी है.
आओ कुछ ऐसा करें,
युवाओं में देश भक्ती का संचार हो,
शहिदों की कुर्बानी सार्थक हो,
गुरुओं की वाणी सार्थक हो,
आपस में भाईचारा बढे,
उसी के साथ मेरा देश आगे बढ़े.
जय हिन्द जय भारत माँ...

नरेंद्र सिंह बरंगली
कार्यालय अधीक्षक, कल्याण प्रभाग

काहे गये परदेस..

भारत मेरा देश आज आज आजादी के पचहत्तर साल पूरे कर रह है
लेकिन यहाँ के बुध्दिमान नौजवान परदेश में चले जा रहे है

इस स्थिति को सामने लाते हुए याद आयी खरगोश और कछुआ की कहानी
और देखें खरगोश के रुप में परदेसी और कछुआके रुम मै भारतीय जवानी

शब्दों से शब्द जुडे और तैयार हुई कविता
न चाहती हूँकिसी का दिल दुखाना फिर भी यही है वास्तविकता

फिर भी किसी का दिल दुखा तो क्षमाप्रार्थी हूँ
भारत के सुपुत्र को कुछ कहना चाहती हूँ

खरगोश और कछुए की सुनो नई कहानी, यहाँ खरगोश को ना थी जल्दी, ना ही कछुएकी गती थी धीमी
खरगोश की अपनी गति थी, लेकिन कुछ तो थी कमी, कछुआ के पास थी तेज बुध्दी और मेहनत की हमी
खरगोश आज कठछुआ की मदद मांगने लगा, कछुआ भी इसमें धन्यता मानने लगा
कछुआ अब निकल पडा अपनी प्रगती के साथ, खरगोश ने अब मिलाया कछुए के हाथ
खरगोशों के देश में अब कछुए दिखने लगे, महत्व था उनको, फिर भी थोडे अलग पडने लगे
उनमें से जो थे देशाभिमानी, उन्हों ने देश की राह पकड ली,
तो सुविधाओं के सुनहरे माहोल में कई ने अपनी जिंदगी बसा ली
सफलता के चक्कर में कई गए देश को छोडकर,
मेरा भारत महान का नारा दिया कालपुरुष ने हंसकर

कल्पना चंद्रकांत कुलकर्णी
आशूलिपिक, कल्याण प्रभाग

आजादी

आजादी कुछ कहना चाहती है
तुम्हारे पास रहना चाहती है
जय जवान, जय किसान सिर्फ नारा हँ
उनकी कठीणाईयों से हमें हमारा घर प्यारा है
नारी सरेआम जलाई जाती है
देश में खबर दबाई जाती है.
देश के लिए एक प्राणों की बाजी लगाता है
स्वार्थ के लिए दूसरा देश बेचता है
कोई पेटभरी से खाना फेकता है
कोई भुकमरा, कुडेदान में खाना धुंडता हे
दलितो के विकास की किसे पडी है
उन्हे मिलनेवाली रियायतों पर,
हमारी सोच अडी है
हम मजहबी सोच छोडेंगे
तभी तो आगे बढेंगे
देखोगे जब विविधताओं में एकता
समझ आयेगी तब भारत की महानता
आजादी कुछ कहना चाहती है
तुम्हारे पास रहना चाहती है.

मंगेश ज. गवारे
प्रवर सहायक
सामान्य प्रशासन विभाग

आज़ादी का अमृत महोत्सव

एक आस बाको है, मेरे दिल में अभी

नाम रोशन कुल का करंगी
बनकर कली आगन को महाकाऊंगी
सपनों को, अपने हौसलों को पंख लगाऊंगी
सफलता की ऊँची उड़ान मै भरुंगी
तुम्हारे विश्वास पे खरी उतरंगी
शब्दों को खाली न जाने दँगी ऐसी बेटी हूँ मैं तुम्हारी
'पर एक आस, आज भी बाकी है, मेरे दिल में अभी

माँ की कोख में पलना है मुझे
विश्व में नाम पिता का रोशन करना है मुझे
इस सुंदर दुनिया को देखना है मुझे
एक आस बाकी है मेरे दिल में अभी

हर क्षण हर पल मैंने चाहा तुम्हे
मेरे बहते लहू की धार बताएगी तुम्हे
मेरा प्यार, मेरा अरमान, मेरे सपनों के सागर हो तुम
मेरा विश्वास, मेरा सजना-सँवरना हो तुम
दिल के हर धड़कन में बसे हो तुम
लंबी आयु की तुम्हारी दिन रात दुआ करती हू मैं
हर दुख मेरा, हर सुख तुम्हारा, ऐसी अर्धांगी हूँ मैं
पर एक आस, आज भी बाकी है, मेरे दिल में अभी
मुझे ना कमजोर तुम बनाना, मेरा हौसला तुम बढ़ना
मेरे आसुओं का करण तुम न बनना, तुम्हारे संग है जीना-मरना
एक आस बाकी है मेरे दिल में अभी

छोड़ आई हँ बाबुल की यादें सभी
बचपन में सखियों संग खेले खल सभी
मायके के आंगन औरमिट्टी के सुगंधको भी
मन भर आता रोटी मैया को देख
ऑसुओं को निगलते बापू और भाई को देख
बहू बनकर बेटी का फर्ज निभाऊँगी सभी
सास-ससुर में माँ-पिता को देखूंगी हर घडी
दिल से सेवा करेगी, ऐसी बहू हँ तुम्हारी
पर एक आस, आज भी बाकी है, मेरे दिल में अभी

बेटी को मोती और बहू को कंकड न समझना
दहेज के लिए मुझे जीते जी न मारना
एक आस बाकी है मेरे दिल में अभी

तुम्हारे सपनों के साथ सोती
तुम्हारी आशाओं के साथ जागती
तुम्हारे मुस्कान से ही जीती
फूलों की तरह तुम्हे संजोती
फूलों की तरह तुम्हे संजोती

मेरे दर्द की दवा हो तुम, मेरे अरमानों की तामीर हो तुम
पँख लगाकर मेरे, ऊंची उडान तुम भरना
दुआ करती हूँ मँ, अपनी मंजिल तुम पाना
ममता की मूरत, त्याग की देवी हो
ऐसे कितने ही दिए नाम तुमनेम ऐसी हूँ मैं मॉ तुम्हारी
पर एक आस, आज भी बाकी है, मेरे दिल में अभी

बुढापे की लाठी तुम मेरी बनना
तुम्हें देखने को मेरी नजरों को न तरसाना
वृध्दाश्रम का रास्ता न दिखाना
एक आस बाकी है, मेरे दिल में अभी

दिशा तेलंग
सहायक यातायात प्रबंधक, यातायात विभाग

आझादी की दास्तां....!!!!

दिलमे उठता है बार बार यही सवाल
75 सालों पहिले हिंदुस्तानका कैसा होगा हाल
गुलामी देखे बिना आझादी का मतलब हम क्या जाने
जाके कोई उनसे पूछे, जो बरसो रहे गुलामी में

आझादी का नारा सुनकर
एक आग सी सुलगती होगी उनके दिल में
ये जिंदा होने की निशानी थी
बहता होता आझाद लहू उनके रग रग में

देश के लिये बलिदान दिये जिन्होने
वो लोग बडे खुशकिस्मत थे
वो आसमां पर तिरंगा लहरा गये
हम किताबों में उनके नाम ढूंढते रहे

गांधी, सुभाष, टिळक और इनमें नाम कई
बिछड गये वों हमसे और आँखे हमारी नम हुई
नाम कई शहीदों का, इतिहास को भी तो पता नहीं
पर भूल जाये उनको, इतने तो हम बेवफा नही

आझादी नहीं तो अस्तिव्व नहीं
जो देश के लिये नमर मिटे, उसका कोई व्यक्तीत्व नही
आझादी की दास्तां बहनी होगी अब हर दिलमे
आओ लहराए तिरंगा आज, हर एक, एक घर में..!!!

मंगेश सावंत
वित्त विभाग

भारत जोड़ दो

15 अंगस्त 1947 का वादा था,
हमें अपना संविधान बनाना था
आजादहम हो तो गये,
डार कई हमारे अपने खो तो गये.
सरहदें बनाकर हमने जख्म ऐसे दिये,
जलती मशाल से भी ना जले, मोहब्बत के दिये
मुद्दतें बीत गई इन सब बातों में,
मुद्दतें कर गई बिना नींद के इन आँखो में
सभी तो अपने थे,
एक ही सपने थे
फिरक्यावोबात थी
कौनसीवो रातथी
जिसमें भारत बट गया,
मानों कोई घड टुकडों में बट गया
आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे है.,
हर सोते हुए को जगा रहे हैं
जो कुछ हुआ, छोड दो,
फिर एकबार भारत जोड दो.

अनिल एम खाबिया
फार्मासिस्ट, चिकित्सा

उपलब्धियाँ

विराज विलास कुवळ विप्लव विलास कुवळे

स्थापत्य अभियांत्रिकी विभाग के संपदा प्रभाग में कार्यरत श्री विलास पांडुरंग कुवळे, टंकक संगणक लिपिक के सुपुत्र कुमार विराज विलास कुवळेने सीसीआई, मुंबई स्थित ग्रेटर मुंबई सिनियर डिस्ट्रिक्ट बँडमिटंन चैम्पियनशीप 2022 में पुरुषों की सिंगल्स प्रतियोगिता में अव्वल स्थान प्राप्त किया तथा श्री विलास पांडुरंग कुवळे के दुसरे सुपुत्र विप्लव विलास कुवळे ने अपने भाई के नक्शेकदम पर चलकर पुरुषों के डबल्स प्रतियोगिता में अव्वल स्थान प्राप्त किया. दोनों विजेता भाईयों को बधाईयाँ.

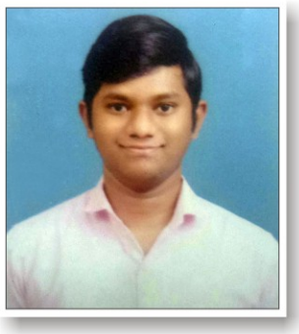

कुमार राजस भिकाजी गांवकर

स्थापत्य अभियांत्रिकी विभाग के संपदा प्रभाग में कार्यरत श्री भिकाजी शिवराम गांवकर, टंकक संगणक लिपिक के सुपुत्र कुमार राजस भिकाजी गांवकर ने सनदी लेखाकार (Chartered Accountant) की अत्यंत कठिन परीक्षा प्रथम प्रयास में अच्छे अंक प्राप्त कर उत्तीर्ण की कुमार राजस भिकाजी गांवकर को उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए ढेर सारी शुभकामनाएँ.

मुंबई पत्तन प्राधिकरण

Mumbai Port Authority

(ISO 9001:2015) (ISO 14001:2015)
(ISO/IEC 27001:2013)

Port House, Shoorji Vallabhdas Marg, Ballard Estate, Mumbai - 400 001.

• **Tel:** (022) 6656 5656 • **Website:** www.mumbaiport.gov.in